सेंसीबल बच्चों को डरती की जरूरत नहीं

(95)

प्रातः क्लास 2-10-9-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी जादूगर बैठ रूहानी बच्चों को, जो बाप से भी तीखे जादूगर हैं उन्हों को समझाते हैं। तुम यहां क्या कर रहे हो यहां बैठे2 कोई चुरपुर नहीं। बाप अथवा साजन सजनियों को युक्ति बता रहे हैं। साजन कहते हैं यहां बैठे2 तुम क्या करते हो। अपने को तुम रेसे(ल0ना0) श्रृंगार रहे हो। कोई समझेगा। तुम यहां सब बैठे हो, नम्बरवार पुरुषार्थ तो फिर है ही। बाप कहते हैं श्रृंगारी बनना है। तुम्हारा एमआबजेक्ट ही यह है। भविष्य अमरपुरी के लिये। यहां बैठे तुम क्या कर रहे हो। पेराडाईज की श्रृंगार के लिये पुरुषार्थ कर रहे हो। इसको क्या कहें। कमाईकहें। यहां बैठे तुम अपने को चेन कर रहे हो। उठते बैठते, चलते, बाप ने यह मन्मनाभव की चाबी देदी है। बस। सिवाय इनके और कोई भी फालतू बातें सुन सुनाकर टाईम वेस्ट मत करो। तुम अपने ही श्रृंगार को तो रखो। दूसरा करता है या नहीं इसमें तुम्हारा क्या जाता। तुम अपने पुरुषार्थ में रहो। कितनी समझ की बात है। कोई नया सुनेगा तो जरूर चन्दर छोड़ेगा। तुम्हारे में कोई तो अपना श्रृंगार कर रहे हैं, कोई और की बिगाड़ रहे हैं। टाईम वेस्ट परचिन्तन आदि में करते रहते हैं। बाप बच्चों को समझाते हैं तुम सिर्फ अपने को देखो कि हम क्या कर रहे हैं। बहुत छोटी युक्ति बताई है सब को। मन्मनाभव। बस। एक ही अक्षर बस है। तुम यहां बैठे हो परन्तु बुद्धि में है कि सारा सृष्टि का चक्र कैसे हम फिरते आये हैं। अभी हम फिर से विश्व का श्रृंगार बन रहे हैं तुम कितने पदमापदम भाग्यशाली हो। यहां बैठे तुम कितना कार्य करते हो। कोई हाथ पावं तो बाबा नहीं लगाते हैं। सिर्फ विचार की बात है। तुम कहेंगे हम यहां बैठे2 उंच ते उंच विश्व का श्रृंगार कर रहे हैं। मनमनाभव। मन्मनाभव का मंत्र कितना अच्छा है। इस योगसे ही तुम्हारे सभी पाप भस्म होकर आत्मा सोने की हो जावेगी तो फिर कितने शोभनिक हो जावेंगे। अभी आत्मा पतित है तो शरीरभी पतित है। शरीर की हालत देखो कैसी है। फिर तुम्हारी आत्मा और काया कंचन बन जावेगी। कमाल है ना। तो अपने को ऐसा श्रृंगार करना है। ऐसे गुण भी धारण करने हैं। बाप [illegible] ही सहायक हैं। अलफ बाबा वे भी नहीं। लेना अलफ की बात है। सिर्फ एक बाप को याद करते रहो तो तुम्हारा श्रृंगार सारा बदल जावेगा। बाप से तुम बड़े जादूगर हो। तुमको युक्ति बताते हैं ऐसे2 करने से तुम्हारा श्रृंगार बन जावेगा। अपना श्रृंगार न करने से मुफ्त अपने को नुकसान पहुंचाते हैं। अभी तुम समझते हो हम [illegible] बाबा से क्या2 करते थे। सारा श्रृंगार ही बिगर कर क्या बन पड़ी है। अभी एक ही मन्मनाभव अक्षर से, बाप की याद से तुम्हारा श्रृंगार होता है। बच्चों को कितना अच्छी रीत समझाकर रिफ्रेश करते हैं। यहां बैठे तुम क्या करते हो बाप की यात्रा में बैठे हो। अगर कोई का ख्याल और2 तरफ होगा तो श्रृंगार थोड़ेही होगा। खुद श्रृंगारी बने तो फिर औरों को भी रास्ता बताना है। बाप आते ही हैं ऐसा श्रृंगारी बनाने। कमाल है बाबा आप की। आप कैसी युक्ति अच्छी बताते हो, उठते, बैठते चलते हमको अपना श्रृंगार करना है। कोई तो अपना श्रृंगार कर फिर दूसरों का भी करते हैं, कोई तो अपना भी श्रृंगार नहीं करते हैं तो दूसरों का भी श्रृंगार बिगाड़ते रहते हैं। फालतू बातें सुनाकर उनकी अवस्था को भी नीचे गिरा देते हैं। खुद भी श्रृंगार से रह जाते हैं तो दूसरों को भी रहा देते हैं। तो अच्छी रीत सोच करो। बाबा कैसी2 युक्ति बताते हैं। भक्ति मार्ग के शास्त्र पढ़ने सेयह युक्तियां नहीं आती। शास्त्र तो हैं भक्ति मार्ग के। तुमको कहते हैं किसी शास्त्रों को नहीं मानते हो। बोलो हम तो सभी मानते हैं आधा कल्प भक्ति की है, शास्त्र पढ़ी हैं। तो कौन नहीं मानता। रात और दिन होते हैं तो जरूर दोनों को मानेंगे ना। यह तो वेहद का दिन और रात। मनुष्यों की तो बिल्कुल ही सुंध इडीयट है। एक्टर होकर कुछ भी नहीं जानते। तो बाप कहते हैं मीठे मीठे बच्चों तुम अपना श्रृंगार करो। टाईम वेस्ट मत करो। टाईम बहुत थोड़ा है। तुम्हारे में बड़ी विशाल बुद्धि चाहिए। बहुत प्रेम रहना चाहिए आपस में। टाईम वेस्ट न करना चाहिए। क्योंकि तुम्हारा टाईम तो बहुत ही मोस्ट वेल्युएबुल है। कौड़ी से हीरे जैसा तुम बनते हो। मुफ्त में थोड़ेही इतना सुन रहे हो। कोई क्या है क्या। बाप अक्षर ही एक सुनाते हैं। बड़े2 अक्लमंद आदमियों को जरूरी बात थोड़ेही कहनी चाहिए। बाबा तो सेकण्ड में जीवनमुक्ति

N.K. JAIN & CO. (Estd 1962) Leading Estate Agents Let without any portfolio ... MADRAS Member ... Chamber of Commerce and Supply ... Republic Colonies

ा बताते हैं। यह हैं सब से ऊंच हैं श्रृंगार वाले। तब तो इन्हों के ही चित्र हैं जिनको बहुत2 पूजते हैं। जितना बड़ा आदमी होगा उतना बड़ा मंदिर बनावेंगे। बड़े श्रृंगार करेंगे। आगे तो देवताओं के चित्र पर हीरों का हार भी पहनाते थे। बाबा को तो अनुभव है ना। बाबा ने खुद भी हीरों का हार बनाया था ल०ना० के लिये। वास्तव में तो इन्हों जैसा पहरधाईश यहां कोई बना न सके। अभी तुम बना रहे हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। तो बाप समझाते हैं बच्चों अपना टाईम वेस्ट मत करो। न अपना टाईम वेस्ट करो न दूसरों का करो। बाप युक्ति बहुत ही सहज बताते हैं। मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जायें। याद बिगर इतना श्रृंगार हो न सके। तुम यह बनने वाले हो ना। दैवी स्वभाव धारण करना है। इसमें कहने की भी दरकार नहीं। परन्तु पत्थरबुधि होने कारण सभी कुछ समझाना पड़ता है। [illegible] बाप। बाप कहते हैं मीठे2 बच्चों तुमने अपने बाप को भूलने से कितना श्रृंगार कम कर दिया है। बाबा तो कहते हैं चलते-फिरते उठते-बैठते श्रृंगार करते रहो। माया भी कम नहीं है। कोई2 लिखते हैं बाबा आप की माया सहन... अरे हमारी माया कहां है। यह तो खेल है ना। मैं तो तुमको माया से छुड़ाने आया हूं। मेरी माया फिर काहे की। इस समय पूरा ही इनका राज्य है। जैसे [illegible] रात और दिन में सेकण्ड का भी फर्क नहीं हो सकता। यह फिर हैं बेहद के रात और दिन। इसमें एक सेकण्ड का भी फर्क नहीं पड़ सकता। अभी तुम बच्चे नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ऐसा श्रृंगार कर रहे हो। बाप कहते हैं चक्रवर्ती राजा बनना है तो चक्र फिराते रहो। सब गृहस्थ व्यवहार में रहो। इसमें सारा बुधि से ही काम लेना है। आत्मा में ही मन बुधि है। यहां तुमको बाहर का गोरख धंधा तो कुछ भी नहीं। यहां आते ही हो तुम अपने को श्रृंगारने। रिफ्रेश होने। बाप पढ़ाते तो सभी को एक जैसा है। यहां बाप के पास आते हैं नये2 पायन्टस सम्मुख सुनने। फिर घर जाते हैं तो जो कुछ सुना वह बाहर निकल जाता। यहां से बाहर निकलने से ही झोलीछांट लेते हैं। जो सुना उस पर मनन चिन्तन नहीं करते हैं। तुम्हारे लिये तो यहां एकान्त की जगह बहुत अच्छी है। बाहर भले तो खट्टा मीठा खाते रहते हैं। एक दो के संग पीते रहते हैं। तो बाप बच्चों को समझाते हैं यह तुम्हारा टाईम मोस्ट वैल्युएबुल है। इनको तुम वेस्ट मत करो। अपने को श्रृंगारने की बहुत युक्तियां मिलती हैं। अभी शास्त्रों का तो मूसा बुधि से निकालो। मैं सभी आत्माओं का उधार करने आता हूं। मैं आया हूं तुमको विश्व की बादशाही देने। तो अब मुझ बाप को याद करो। काम काज करते भी बाप को याद करते रहो। इतने सभी ढेर आत्मायें हैं आशुक हैं एक परमपिता परमात्मा माशुक के। यह सभी जिसमानी कथायें कहानियां आदि तो तुमने बहुत सुनी हैं। अभी बाप कहते हैं यह सभी भूल जाओ। भक्ति मार्ग में तुमने मुझे याद किया और प्रतिज्ञा भी किया हम आप के ही बनेंगे। ढेर के ढेर आशुकों का एक माशुक है। भक्ति मार्ग में तो कोई भी उनको नहीं जानते हैं। सभी गपोड़े ही गपोड़े हैं। ब्रह्म में लीन होंगे यह होगा, यह सभी फालतू बकवाद करते रहते हैं। एक भी मनुष्य मोक्ष को नहीं पा सकता। यह तो अनादि बना बनाया ड्रामा है। इतने सभी एक्टर्स हैं। इसमें जरा भी फर्क नहीं हो सकता। बाप कहते हैं सिर्फ एक अल्फ को याद करो। तो तुम्हारा यह श्रृंगार हो जावेगा। अभी तो यह बन रहे होना। स्मृति में आया। अनेक बार हमने यह श्रृंगार किया। कल्प कल्प बाबा आवेंगे हम आप से यह सुनेंगे। कितनी गुह्य पायन्टस हैं। बाप ने कितनी अच्छी युक्ति बताई है। वारी जावेंगे ऐसे बाप पर। आशुक माशुक भी सभी एक जैसे नहीं होते। यह तो सभी आत्माओं का एक ही माशुक है। जिसमानी कोई बात ही नहीं। पुरुषोत्तम संगम युग पर ही बाप से यह युक्ति मिलती है। कहां भी जाओ, खाओ, पीओ घूमो फिरो, नौकरी करो अपना श्रृंगार करते रहो। आत्मायें सभी एक माशुक के आशुक हैं। सभी उनको ही याद करते हैं। कोई कोई बच्चे कहते हैं हम तो 24 घंटे याद करते हैं परन्तु सदैव तो कोई कर ही नहीं सकते। बहुत में बहुत दो अढ़ाई घंटे तक लिखते हैं। जानती अगर कोई लिखते हैं तो बाबा मानता ही नहीं। दूसरों को स्मृति दिलाते नहीं हो तो कैसे समझें कि तुम याद करते हो। क्या कोई डिफीकल्ट बात है। कोई इनमें खर्चा है। कुछ

भी नहीं। बेहद के बाप को सिर्फ याद करते रहो तुम्हारे पाप कट जावेंगे। देवोगुण भी धारण करनी है। पतित कोई शान्तिधाम वा सुखधाम में जा न सके। बच्चों को कहते हैं सभी अपने को भाई2 समझो। 84 जन्मों का पार्ट अभी पूरा होताहै। यह पुराना चोला छोड़ने का है। ड्रामा देखो कैसा बना हुआ है। यह भी तुम जानते हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। दुनिया में कोई भी कुछ नहीं जानते हैं। हरेक अपने अन्दर से पूछे। बाप थोड़ेही अन्तर्यामी है जो एक एक के अन्दर बैठ देखेंगे। हरेक अपने से पूछे हम बाप के मत पर चलते हैं। चलेंगे तो शृंगार भी अच्छा होगा। एक दो की उल्टी बातें सुनकर फिर सुनाकर आपस में शृंगार बिगार देते हैं। तो दूसरों का भी बिगार देते हैं। बच्चों को तो इसी धुन में लगा रहना चाहिए कि हम ऐसे शृंगार धारण कैसे करें। बाकी जो कुछ है वह ठीक है। सिर्फ पेट के लिये रोटी आराम से मिले। मामूली पेट का आठआना खर्चा है। मत लोग का चार आना। क्या खाते हैं। सिर्फ बाटी(रोटी) और लाल भिर्जी। कितने ताकतवान हैं। बूढ़ी2 माईयां भी कितना बोझ उठाती है। तुमको रायलपने की आदत है उनको तो अमीरी2 गरीबी की ही आदत पड़ी हुई है। भल तुम सन्यासी हो परन्तु राजयोगी हो। न बहुत ऊंचा न बहुत नीचा। खाओ भल परन्तु जवान हिर न हाये। यह एक दो को याद दिलाओ। शिव बाबा याद है? वरसा याद है? विश्व की बादशाही का शृंगार याद है? विचार करो यहां बैठे बैठे तुम्हारी क्या कमाई है। इस कमाई से ही अपार सुख मिलना है। सिर्फ याद की यात्रा से। और कोई तकलीफ नहीं। भक्ति मार्ग की रात में मनुष्य कितने धक्के आदि खाते हैं। अभी बाप आये हैं शृंगारने तो अपना अच्छी रीति ख्याल करो। भूलो मत। माया भूला देती है। फिर तो टाईम बहुत ही वेस्ट करते हैं। तुम्हारा तो यह बहुत ही वैल्युएबुल टाईम है। पढ़ाई की मेहनत से मनुष्य क्या से क्या बन जाते हैं। बाबा तुम्हारे को और कोई तकलीफ नहीं देते हैं। सिर्फ कहते हैं बाप को याद करो। बस। कोई भी किताब आदि उठाने की दरकार ही नहीं। बाबा कोई किताब उठाते हैं क्या। बाप कहते हैं मैं आकर इस प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा एडाप्ट करता हूं। प्रजापिता है ना तो प्रजा इतने कुलवंशावली कैसे होगा। बच्चे एडाप्टेड होते हैं। वरसा बाप का मिलने का है तो बाप ब्रह्मा द्वारा एडाप्ट करते हैं। इसलिये उनको माता कहा जाता है।

यह भी जानते हो बाप का आना बड़ा एक्युरेट है। एक्युरेट टाईम पर आते हैं फिर एक्युरेट टाईम पर जावेंगे। दुनिया की बदली तो होना ही है। शास्त्रों में लिख दिया है तो किसकी भी बुद्धि में नहीं आता। कहते हैं क्या सभी शास्त्र झूठे शास्त्र हैं। व्यास भगवान झूठे थे। भगवान कौन है यह भी विचारों को पता नहीं है। जबकि व्यास भगवान है तो फिर भगवान को पत्थर भितर में क्यों कहते हो। बिल्कुल ही अकल चट हो गया है। अभी बाप तुमको कितना अकल देते हैं बाप के मत पर चलना है। स्टुडन्ट्स जो पढ़ते हैं वही बुद्धि में चलता है ना। तुम भी यह संस्कार ले जाते हो। जो बाप के संस्कार हैं तुम्हारी आत्मा में भी वैसे ही संस्कार हैं। फिर जब यहां आवेंगे तो वही पार्ट रिपीट होगा नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। अभी अपने दिल से पूछो कितना पुरुषार्थ किया है अपने को शृंगारने। टाईम वेस्ट तो नहीं करते। बाप सावधान करते हैं बाहियात बातों में कहीं भी टाईम न गवांओ। बाप के श्रीमत पर कायम रहो। मनुष्य मत पर न चलो। तुमको यह पता थोड़े ही था हम पुरानी दुनिया में हैं। बाप ने बताया है तुम क्या थे। अब इस पुरानी दुनिया में कितने अपार दुःख हैं। यह भी ड्रामा अनुसार पार्ट मिला हुआ है। ड्रामा अनुसार अनेकानेक विघ्न भी पड़ते हैं। कन्यायें कितना रो पुकारती हैं। बाबा हमको इससे छुड़ाओ। एक द्रौपदी को 5 पति थोड़ेही नंगन करते हैं। यह बातें शास्त्रों में बैठ बनाई है। बाकी ऐसे थोड़ेही है। सभा में थोड़ेही नंगन करेंगे। जुआ आदि की बात शास्त्रों में लिखने से मनुष्य भी यह सीख गये हैं। तो बाप समझाते हैं यह ज्ञान और भक्ति का खेल है। वन्डरफुल ड्रामा है। इतनी छोटी आत्मा में सारा अविनाशी पार्ट नूंधा हुआ है। कभी घिसता ही नहीं। वन्डर है ना। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप बाबा का यादप्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को नमस्ते।

फिर भी बादशाही का शृंगार याद है?